http://amritkalashtimes.com

अमृत कलश टाइम्स

वर्ष : 18
अंक : 139

प्रयागराज मंगलवार 04 फरवरी 2025

पृष्ठः- 4, मूल्यः- एक रुपया

बसंत पंचमी पर साधु संतों और श्रद्धालुओं को योगी ने दी बधाई

महाकुम्भ नगर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बसंत पंचमी के पावन अवसर पर महाकुम्भ 2025 में पवित्र त्रिवेणी संगम में अमृत स्नान कर पुण्य लाभ अर्जित करने वाले पूज्य साधु–संतों, धर्माचार्यों, सभी अखाड़ों, कल्पवासियों एवं श्रद्धालुओं को हार्दिक बधाई दी है। उन्होंने कहा, "महाकुम्भ केवल भारत नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के लिए आध्यात्मिक प्रेरणा का स्रोत है।" मुख्यमंत्री ने प्रशासन द्वारा की गई व्यवस्थाओं की भी सराहना की और कहा कि इस आयोजन में भाग लेने वाले श्रद्धालु भगवान की कृपा प्राप्त करते हैं। योगी ने इस महाकुम्भ को भारत की सांस्कृतिक धरोहर और आध्यात्मिक मूल्यों को प्रस्तुत करने का एक महत्वपूर्ण अवसर बताया और इसके द्वारा समाज में शांति, समृद्धि और सद्भाव की भावना को साझा करने की शुभकामनाएं दीं।

महाकुंभ का आखिरी अमृत स्नान

1.63 करोड़ ने डुबकी लगाई

- संगम से 10KM तक श्रद्धालुओं की भीड़, 30 देशों से लोग पहुंचे
- बसंत पंचमी पर महाकुंभ का तीसरा अमृत स्नान जारी, साधु–संतों पर हेलिकॉप्टर से की जा रही पुष्प वर्षा

प्रयागराज,(एजेंसी)। महाकुंभ का तीसरा अमृत स्नान बसंत पंचमी के अवसर पर सोमवार तड़के से शुरू हो गया, जिसमें देश दुनिया से लाखों की संख्या में लोग गंगा, यमुना और सरस्वती के त्रिवेणी संगम में आस्था की डुबकी लगाने आ रहे हैं। अधिकारियों ने बताया कि सुबह 8 बजे तक 62 लाख से अधिक लोगों ने डुबकी लगा ली है। मेला प्राधिकरण के एक अधिकारी ने बताया, "संगम घाट पर नागा साधु संतों और आम श्रद्धालुओं के स्नान के दौरान हेलीकॉप्टर से पुष्पवर्षा की गई। हर कोई अमृत स्नान का अलौकिक आनंद ले रहा है और चारों ओर हर हर गंगे का घोष सुनाई दे रहा है।श्श उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने श्रद्धालुओं को बसंत पंचमी की हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए रविवार को सोशल मीडिया मंच 'एक्सश पर लिखा, "महाकुंभ में मां गंगा, यमुना और सरस्वती की दिव्य धाराओं में पवित्र अमृत स्नान कर पुण्य लाभ अर्जित करने वाले सभी श्रद्धालुओं को हार्दिक बधाई।श्श सूचना निदेशक शिशिर ने बताया कि योगी आदित्यनाथ लखनऊ में अपने आधिकारिक आवास पर प्रमुख सचिव (गृह) और डीजीपी (पुलिस महानिदेशक) के साथ मिलकर तड़के साढ़े तीन बजे से ही महाकुंभ में स्नान संबंधी व्यवस्था पर नजर रखे हुए हैं। उन्होंने कहा कि अमृत स्नान निर्विघ्न रूप से जारी है और संन्यासी अखाड़ों के साधु संतों का अमृत स्नान संपन्न होने के साथ अब बैरागी अखाड़े घाट पर पहुंच रहे हैं। क्रम में सबसे पहले संन्यासी अखाड़ों में महानिर्वाणी और अटल अखाड़े के साधु संतों और पीठाधीश्वर ने संगम घाट पर पहुंचकर स्नान किया। इसके बाद, निरंजनी और आनंद अखाड़ा और जूना एवं आवाहन अखाड़ा के साधु संतों ने अमृत स्नान किया। मौनी अमावस्या पर अमृत स्नान के दौरान मची भगदड़ की घटना के बाद यह अमृत स्नान हो रहा है। मौनी अमावस्या पर भगदड़ की घटना में कम से कम 30 लोगों की मौत हो गई थी तथा 60 लोग घायल हो गए थे। संगम तट पर भीड़ से बचने के लिए बहुत से लोग दारागंज में बने पक्के घाट दशाश्वमेध घाट पर स्नान के लिए जुटे हैं। इस घाट पर स्नान करने रायपुर से आईं राम प्यारी ने एक न्यूज एजेंसी से कहा, "गंगा स्नान करना महत्वपूर्ण है। इसलिए हमने भारी भीड़ के कारण संगम जाने के बजाय यहां स्नान करना ठीक समझा।श्श सरकार द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक, सोमवार को सुबह आठ बजे तक 62 लाख से अधिक लोगों ने डुबकी लगाई, जबकि 13 जनवरी से अब तक करीब 35 करोड़ लोग गंगा और संगम में स्नान कर चुके हैं। सरकार का अनुमान है कि सोमवार को पांच करोड़ लोग स्नान करेंगे। महाकुंभ के अंतिम अमृत स्नान पर्व बसंत पंचमी पर मेला प्रशासन और पुलिस को "शून्य त्रुटिश्श के साथ सकुशल स्नान संपन्न कराने के मुख्यमंत्री के निर्देश के बाद पुलिस और प्रशासन पूरी तरह से मुस्तैद है और अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (एडीजी) भानु भास्कर स्वयं मेला क्षेत्र में भीड़ नियंत्रण व्यवस्था को देख रहे हैं। पुलिस उपमहानिरीक्षक (डीआईजी पुलिस) (महाकुंभ) वैभव कृष्ण ने एक न्यूज एजेंसी को बताया कि 29 जनवरी की घटना के मद्देनजर अधिक भीड़ वाले स्थानों पर अतिरिक्त पुलिस बल की तैनाती की गई है। आज सबकुछ सुचारू ढंग से जारी है। सरकार ने बसंत पंचमी पर 'ऑपरेशन इलेवनश से भीड़ प्रबंधन की योजना बनाई है। सरकार ने एक बयान जारी कर कहा कि श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिहाज से सोमवार को एकल मार्ग की व्यवस्था लागू रहेगी। वहीं, त्रिवेणी के घाटों पर अत्यधिक दबाव रोकने के लिए अतिरिक्त पुलिस बल लगाए गए हैं।

छत्तीसगढ़ में सुरक्षा बलों और नक्सलियों के बीच मुठभेड़, एक नक्सली की मौत

कांकेर,(एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के कांकेर और नारायणपुर जिले के सीमावर्ती इलाकों पखांजूर और पानीडोबीर के इलाके में सुरक्षा बलों और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ में एक नक्सली मारा गया। सुरक्षा बलों ने एक

एसएलआर (स्ट्राइकर राइफल) हथियार भी बरामद किया है। सूत्रों के अनुसार, मुठभेड़ रुक–रुक कर जारी है। यह मुठभेड़ तब शुरू हुआ जब जिला रिजर्व गार्ड और बीएसएफ के जवान एरिया डोमिनेशन के अंतर्गत इलाके में गश्त पर थे। सुरक्षा बलों को नक्सलियों की उपस्थिति की सूचना मिली थी, जिसके बाद कोयलीबेड़ा थाना क्षेत्र के पानीडोबीर इलाके में नक्सलियों से मुठभेड़ शुरू की।

'जनता ने अगर नारेबाजी के लिए भेजा है तो यही करिए या सदन चलाइए'

विपक्ष के हंगामे पर बिरला की दो टूक

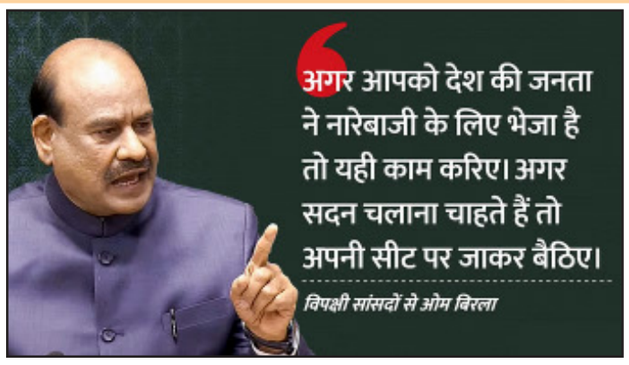

नई दिल्ली,(एजेंसी)। बजट सत्र के तीसरे दिन सदन की कार्यवाही आरंभ होते ही विपक्षी सदस्य महाकुंभ में मची भगदड़ की घटना पर सरकार से जवाब की मांग करते हुए नारेबाजी करने लगे। लोकसभा अध्यक्ष ने नारेबाजी कर रहे सदस्यों से कहा, श्इस विषय का उल्लेख राष्ट्रपति महोदया ने अपने अभिभाषण में किया था। आप लोग अभिभाषण पर चर्चा के दौरान यह विषय रख सकते हैं।श बजट सत्र के तीसरे दिन सोमवार को लोकसभा की कार्यवाही शुरू होते ही विपक्ष ने हंगामा शुरू कर दिया। वे महाकुंभ में मची भगदड़ की घटना पर

सरकार से जवाब की मांग कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने जमकर नारेबाजी भी की। इस पर लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सदन में नारेबाजी करने वाले विपक्षी दलों के सांसदों से कहा कि यदि जनता ने उन्हें नारे लगाने के लिए भेजा है जो यही काम करें या फिर कार्यवाही चलने दें। दरअसल, बजट सत्र के तीसरे दिन सदन की कार्यवाही आरंभ होते ही विपक्षी सदस्य महाकुंभ में मची भगदड़ की घटना पर सरकार से जवाब की मांग करते हुए नारेबाजी करने लगे। लोकसभा अध्यक्ष ने नारेबाजी कर रहे सदस्यों से कहा, श्इस विषय का उल्लेख राष्ट्रपति महोदया ने अपने अभिभाषण में किया था। आप लोग अभिभाषण पर चर्चा के दौरान यह विषय रख सकते हैं।श श्प्रश्नकाल महत्वपूर्ण समय होता हैश उन्होंने कहा कि प्रश्नकाल महत्वपूर्ण समय होता है।

राउत ने पीएम मोदी के महाकुंभ दौरे की तारीख पर उठाए सवाल

मुंबई,(एजेंसी)। शिवसेना (यूबीटी) नेता संजय राउत ने मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा कि पहली बार कोई सीएम मुख्यमंत्री के आधिकारिक आवास में जाने से डर रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पांच फरवरी को महाकुंभ में संगम स्नान और पूजन करेंगे।

दिल्ली चुनाव के दिन पीएम मोदी के कुंभ दौरे को लेकर विपक्ष सवाल खड़े कर रहा है। महाराष्ट्र में शिवसेना (यूबीटी) नेता संजय राउत ने भी पीएम मोदी के कुंभ दौरे को लेकर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी को लगता है कि उनके ऐसा करने से दिल्ली की जनता उन्हें वोट देंगी। उद्धव ठाकरे गुट के नेता ने आगे कहा कि अगर लोगों ने ऐसा करना शुरू कर दिया तो लोकतंत्र खतरे में आ जाएगा। पीएम मोदी के कुंभ दौरे पर संजय राउत ने उठाए सवाल दिल्ली चुनाव के दौरान पीएम मोदी के कुंभ दौरे को लेकर शिवसेना (यूबीटी) नेता संजय राउत ने कहा, उसी दिन पीएम मोदी पवित्र स्नान के लिए कुंभ का दौरा कर रहे हैं।

महाकुंभ हादसे में षड्यंत्र की बू: रविशंकर

- जया बच्चन का बेतुका बयान– सबसे दूषित पानी कुंभ में

नई दिल्ली,(एजेंसी)। भाजपा सांसद रविशंकर प्रसाद ने आशंका जताई कि महाकुंभ हादसे में षड्यंत्र हो सकता है और हादसे की जांच के बाद पूरी तस्वीर साफ हो जाएगी। वहीं सपा सांसद जया बच्चन ने महाकुंभ हादसे को लेकर बेतुका बयान दिया और कहा कि इस वक्त सबसे दूषित पानी कुंभ का है क्योंकि भगदड़ के बाद लोगों के शव गंगा में बहाए गए।

महाकुंभ हादसे को लेकर सोमवार को विपक्ष ने संसद में जमकर हंगामा किया। विपक्ष की मांग है कि स्थगन प्रस्ताव लाकर महाकुंभ हादसे पर चर्चा की जाए और मृतकों की संख्या की पुष्टि की

जाए। विपक्ष ने राज्यसभा से इस मुद्दे पर वॉकआउट भी किया। लोकसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर चर्चा के दौरान भाजपा सांसद रविशंकर प्रसाद ने आशंका जताई कि महाकुंभ हादसे में षड्यंत्र हो सकता है और हादसे की जांच के बाद पूरी तस्वीर साफ हो जाएगी। वहीं सपा सांसद जया बच्चन ने महाकुंभ हादसे को लेकर बेतुका बयान दिया और कहा कि इस वक्त सबसे दूषित पानी कुंभ का है क्योंकि भगदड़ के बाद लोगों के शव गंगा में बहाए गए।

रविशंकर प्रसाद ने जताई षड्यंत्र की आशंका रविशंकर प्रसाद ने राष्ट्रपति के अभिभाषण पर लोकसभा में चर्चा के दौरान कहा कि श्राष्ट्रपति ने अपने अभिभाषण में महाकुंभ की भी चर्चा की।

रिटायरमेंट के बाद आपको कौन सा पद ऑफर किया गया है?: अरविंद केजरीवाल

नई दिल्ली,(एजेंसी)। आम आदमी पार्टी के प्रमुख अरविंद केजरीवाल ने सोमवार को एक बार फिर चुनाव आयोग के मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार पर हमला बोला। उन्होंने राजीव कुमार से ष्लालचष को छोड़ने की अपील की। दिल्ली विधानसभा चुनावों के लिए प्रचार के आखिरी दिन 5 फरवरी को मतदान से पहले, केजरीवाल ने चुनाव आयोग पर भाजपा का पक्ष लेने का आरोप लगाया। लालच से बचने की दी सलाह केजरीवाल ने कहा, ष्मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार जी इस महीने के अंत में रिटायर हो रहे हैं। उन्हें कौन सा पद ऑफर किया गया है कि वो देश को बेचना चाहते हैं? कौन सा ऐसा पद है जिसके बदले आप देश की लोकतंत्र को नष्ट कर रहे हैं? गवर्नर, राष्ट्रपति?ष उन्होंने आगे कहा, ष्आपने 45 साल काम किया है, अब देश को अपने करियर के लालच के लिए न बेचें। देश का लोकतंत्र न खत्म करें। ये पहली बार नहीं था जब केजरीवाल ने राजीव कुमार पर सवाल उठाए थे। 30 जनवरी को भी उन्होंने आरोप लगाया था कि ब्न्ड नौकरी के लिए चुनाव आयोग को गड़बड़ करवा रहा है।

लोकसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर चर्चा के दौरान गरजे राहुल

- बेरोजगारी को लेकर सरकार को घेरा

नई दिल्ली,(एजेंसी)। कांग्रेस सांसद और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने कहा कि तेलंगाना में लगभग 90: आबादी दलित, आदिवासी, पिछड़े और अल्पसंख्यकों की है और मुझे यकीन है कि पूरे देश में यही कहानी है। अगर हम इस देश के सबसे बड़े कॉरपोरेट्स को देखें, तो उनमें से कोई भी ओबीसी, दलित या आदिवासी के स्वामित्व में नहीं है। किसी भी नए विकास प्रतिमान के केंद्र में एक नए प्रतिमान की वास्तुकला होती है और नए प्रतिमान की वास्तुकला तभी बनाई जा सकती है जब जातिगत संवेदना को सामने रखा जाए। संसद के बजट

के सत्र के दौरान सोमवार को लोकसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर चर्चा शुरू हुई। इस दौरान नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने भी चर्चा में हिस्सा लिया। उन्होंने सरकार पर करारा हमला करते हुए कहा कि राष्ट्रपति के अभिभाषण में कुछ भी नया नहीं था। उसमें हर चीज वह थी, जो हम सब कई सुन चुके हैं। लोकसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने कहा, श्राष्ट्रपति के अभिभाषण के दौरान जो कुछ भी कहा जा रहा था।

शिक्षा व्यवस्था

किसी भी देश में शिक्षा को राजनीतिक रुझानों से ऊपर रखना ही आदर्श व्यवस्था मानी जाएगी। शिक्षा संस्थान ऐसे मंदिर होते हैं जहां न सिर्फ अलग–अलग जाति–धर्म बल्कि, अलग–अलग राजनीतिक झुकाव वाले लोग विद्या की देवी के समक्ष शीश नवाने आते हैं। यह दुर्भाग्य है कि आजादी के 75 साल के बाद भी हम इस पर चर्चा कर रहे हैं कि शिक्षा व्यवस्था क्या होनी चाहिए? जबकि न सिर्फ सभी प्रमुख राजनीतिक दलों बल्कि, अन्य भागीदारों को भी सर्वसम्मति से शिक्षा–व्यवस्था का ऐसा पुख्ता आधार तैयार करना चाहिए जिसे बार–बार बदलने की आवश्यकता ही न पड़े। लेकिन अपने देश में ठीक इसका उल्टा हो रहा है।

नया मामला यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन (यूजीसी) के नियमों में बदलाव का है, जिसका मसौदा सामने आने पर न सिर्फ शिक्षाविदों बल्कि, राजनीतिक दलों में घमासान मच गया है। दुर्भाग्यवश इसका समर्थन और विरोध भी राजनीतिक सुविधा के आधार पर हो रहा है। यूजीसी के नए मसौदे में कुलाधिपति, जो राज्यपाल ही होते हैं, को राज्य विश्वविद्यालयों की नियुक्ति में ज्यादा अधिकार देने की वकालत की गई । चूंकि राज्यपाल केंद्र सरकार का प्रतिनिधि होता है, इसलिए राज्यों को डर है कि उसके माध्यम से केंद्र सरकार मनमानी करेगी और राजनीतिक नफा–नुकसान में राज्य की सत्ता पर आसीन दल का समीकरण गड़बड़ा जाएगा। मसौदे में शिक्षाविदों के अतिरिक्त उद्योग जगत और सार्वजनिक क्षेत्र की हस्तियों को कुलपति नियुक्त करने के प्रावधान का भी प्रस्ताव है।शिक्षाविद इस प्रस्ताव को अपने अधिकार क्षेत्र में बाहरी दखल के रूप में देख रहे हैं। उन्हें शिक्षा के मंदिर में अपना वर्चस्व खत्म होता दिख रहा है। नियमों में बदलाव के प्रस्तावों और उनका विरोध दोनों ही पक्षों के तर्कों को एकदम से खारिज नहीं किया जा सकता। खासकर ऐसी स्थिति में जब राज्यपालों की भूमिका और उनके माध्यम से अवांछित केंद्रीय दखल का लंबा इतिहास रहा हो। इसी पृष्ठभूमि में तमिलनाडु के बाद अब केरल ने यूजीसी में संभावित बदलाव के खिलाफ विधानसभा में प्रस्ताव पारित कर दिया है। यानी राज्यपालों और राज्य सरकारों में टकराव का नया मोर्चा खुल गया है।विश्वविद्यालय विकास का वैचारिक आधार प्रदान करते हैं। इसे हर तरह के आग्रहों से मुक्त रखना अकादमिक स्वतंत्रता की पहली शर्त है। राजनीति करना और इसके दुराग्रहों से मुक्त होना भी हम यहीं सीखते हैं। यहां राजनीति न हो यह आग्रह भी उतना ही गलत होगा जितना यह कि इसे राजनीति का अड्डा ही बना दिया जाए। इसलिए सभी पक्षों को आग्रहों–दुराग्रहों से मुक्त होकर कदम उठाने होंगे।

दुर्दशा का तथ्य नकारना व्यर्थ

देहाती इलाकों में कर्ज के बोझ तले दबे परिवारों की संख्या में साढ़े चार प्रतिशत इजाफा हुआ है। 2016–17 के सर्वे के दौरान ऐसे परिवारों की संख्या 47.40 प्रतिशत थी, जो ताजा सर्वे के समय 52 फीसदी हो चुकी थी।एक और सरकारी संस्था की रिपोर्ट ने श्रमिक वर्ग की बढ़ती रही दुर्दशा पर रोशनी डाली है। राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण बैंक (नाबार्ड) के अखिल भारतीय ग्रामीण वित्तीय समावेशन सर्वे (एनएएफआईएस) 2021–22 के दौरान पाया गया देहाती इलाकों में कर्ज के बोझ तले दबे परिवारों की संख्या में साढ़े चार प्रतिशत इजाफा हुआ है।2016–17 के सर्वे के दौरान ऐसे परिवारों की संख्या 47.40 प्रतिशत थी, जो ताजा सर्वे के समय 52 फीसदी हो चुकी थी। कहा जा सकता है कि अब ज्यादा लोग लाइफ स्टाइल बढ़ाने के लिए कर्ज ले रहे हैं। मगर आय की स्थिति पर गौर करें, तो ऐसे तर्क निराधार मालूम पड़ेंगे।ताजा सर्वे में ग्रामीण परिवारों की औसत मासिक आय 12,698 रु. सामने आई। इसमें पांच साल में डेढ़ गुना से ज्यादा बढ़ोतरी हुई। तब औसत आमदनी 8,059 रु. थी।राष्ट्रीय परिवार 4.4 व्यक्तियों का है। तो हर व्यक्ति पर आय 2,886 रु. बैठती है। यानी प्रति दिन एक व्यक्ति की खर्च क्षमता 96 रुपये होगी।यह औसत आय है, जिसमें ग्रामीण इलाकों के सबसे धनी और गरीब दोनों तबकों की आमदनी शामिल है।

2013–14 में रंगराजन समिति ने भारत की गरीबी रेखा 32 रु. प्रति दिन खर्च क्षमता रखने का सुझाव दिया था। दस साल की मुद्रास्फीति से उसे एडजस्ट करें, तो ये रकम आज तकरीबन 60 रुपये बैठेगी।इस पैमाने पर पर अनुमान लगाएं, तो संभव है कि भारत में आधे से ज्यादा लोग गरीबी रेखा के नीचे आएंगे। वैसे, जिन परिवारों की औसत आय 12 हजार रुपये हो, वे लाइफ स्टाइल संबंधी चीजों की खरीद के लिए कर्ज लें, यह मानने का कोई तुक वैसे भी नहीं है। तो जाहिर है, शिक्षा, स्वास्थ्य और शादी–विवाह आदि जैसे खर्चों के लिए कर्ज लेने वाले परिवार बढ़े हैं।इसके पहले लेबर ब्यूरो की पारिश्रमिक दर सूचकांक रिपोर्ट, कृषि मंत्रालय के जारी हुए आंकड़ों, तथा पीरियोडिक लेबर फोर्स सर्वे रिपोर्ट आदि में बताया जा चुका है कि श्रमिक वर्ग की वास्तविक आय गिरी है और औसत आय में वृद्धि गतिरुद्ध हो गई है।

सतत एवं निर्बाध विद्युत आपूर्ति ही हमारा ध्येय

0–प्रद्युम्न सिंह तोमर

प्रदेश के हर बिजली उपभोक्ता को सतत एवं निर्बाध विद्युत आपूर्ति ही हमारी सरकार का ध्येय है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के कुशल मार्गदर्शन में हमारा विभाग लगातार उपभोक्ताओं को गुणवत्तापूर्ण बिजली उपलब्ध कराने के साथ ही उनकी समस्याओं का त्वरित निराकरण भी कर रहा है। इसी का परिणाम है कि सीएम हेल्पलाइन पोर्टल में प्राप्त शिकायतों के निराकरण में ऊर्जा विभाग अव्वल है।देश के घरेलू एवं कृषि उपभोक्ताओं को विगत वर्षों की तरह वित्तीय वर्ष 2024–25 के लिये लागू टैरिफ दरों में राहत देने के लिये बिजली कंपनियों को अनुमानित 24 हजार 420 करोड़ 8 लाख रूपये की सब्सिडी देने का निर्णय राज्य शासन द्वारा लिया गया है। यह सब्सिडी अटल गृह ज्योति योजना, अटल कृषि ज्योति योजना, टैरिफ सब्सिडी और निरूशुल्क विद्युत प्रदाय योजना में दी जायेगी।

मध्यप्रदेश पावर जनरेटिंग कंपनी के ताप विद्युत गृहों द्वारा वित्तीय वर्ष 2023–24 में अब तक का सर्वाधिक 28627 मिलि?यन यूनिट विद्युत उत्पादन कर नया रिकार्ड बनाया गया है। यह पावर जनरेटिंग कंपनी के इतिहास का सर्वाधि ा?क ताप विद्युत उत्पादन है। ताप विद्युत गृहों द्वारा विभिन्न मापदंडों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया गया। ताप विद्युत गृहों का इस दौरान प्लांट लोड फेक्टर (पीएलएफ) 60.3 प्रतिशत रहा, जो वर्ष 2019–20 के पश्चात् सर्वाधिक है। वित्तीय वर्ष 23–24 के दौरान 13 थर्मल इकाइयों ने लगातार 100 दिनों एवं अधिक सतत् व निर्बाध विद्युत उत्पादन किया, जिनमें से दो इकाइयों ने 200 दिनों से अधिक समय तक विद्युत उत्पादन किया।राज्य शासन के निर्णयानुसार मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा अब उपभोक्ताओं को एक ही परिसर में पृथक–पृथक रहने पर एक से अधिक बिजली कनेक्शन प्रदान करने की सुविधा कुछ शर्तों के आधार पर कराई जा रही है। ऐसे आवेदक जो एक ही परिसर में निवास कर रहे हैं लेकिन अलग–अलग रहते हैं, तो उनके द्वारा अलग बिजली कनेक्शन का आवेदन करने पर उन्हें नवीन कनेक्शन दिया जा रहा है।

प्रदेश में बिजली अधोसंरचना का लगातार विकास हो रहा है। वर्तमान में 33 के. वी. लाइंस 61 हजार 162 किलोमीटर हो गई है। 33 के.वी. लाइंस वर्ष 2003 में 29 हजार 70 किलोमीटर, वर्ष 2008 में 33 हजार 913 , वर्ष 2011 में 38 हजार 867, वर्ष 2013 में 41 हजार 528, वर्ष 2014 में 43 हजार 910 और वर्ष 2024 में 61 हजार 162 किलोमीटर हो गई है। वित्तीय वर्ष 2023–24 में मार्च 2024 तक 3165 किलोमीटर 11 केव्ही लाइन का विस्तार किया गया है। यह क्रम लगातार जारी है।मध्यप्रदेश पावर जनरेटिंग कंपनी के अमरकंटक ताप विद्युत गृह चचाई के अभियंताओं व कार्मिकों के समर्पण, कड़ी मेहनत और प्रतिबद्धता ने 210 मेगावाट स्थापित क्षमता की यूनिट को लगातार 300 दिन तक संचालित करने में सफलता हासिल की है। यह विद्युत यूनिट की स्थापना के बाद सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है।

इसी तरह श्री सिंगाजी ताप विद्युत गृह दोंगलिया (एसएसटीपीपी खंडवा) के अभियंताओं व कार्मिकों ने एक बार फिर कमाल दिखाते हुए 660 मेगावाट स्थापित क्षमता की यूनिट नंबर 3 को 200 दिन तक संचालित करने में सफलता हासिल की है।बिजली आपूर्ति व्यवस्था सुदृढ़ करने के लिये अधोसंरचना निर्माण के उल्लेखनीय कार्य किये गये हैं। ट्रांसमिशन व्यवस्था मजबूत करने के लिये वित्तीय वर्ष 2023–24 में 14 अति उच्चदाब उप केन्द्रों की स्थापना की गई है। साथ ही 26 अति उच्चदाब पॉवर ट्रांसफार्मर ऊर्जीकृत किये गये हैं। कुल 818.170 सर्किट किलोमीटर अति उच्चदाब लाइन का निर्माण भी किया गया है। यही नहीं 25 अतिरिक्त अति उच्चदाब पॉवर ट्रांसफार्मर की स्थापना एवं 40 अति उच्चदाब पॉवर ट्रांसफार्मरों की क्षमता वृद्धि कर अति उच्चदाब उप केन्द्रों की क्षमता में 4630 एमव्हीए की वृद्धि भी की गई है।

किसानों को शीघ्र स्थायी सिंचाई पंप कनेक्शन दिये जाने के उद्देश्य से स्वयं का ट्रांसफार्मर लगाये जाने की योजना लागू की गई है। योजना में किसान स्वयं अथवा समूह में निर्धारित मापदंड के अनुसार ट्रांसफार्मर स्थापित कर सकते हैं। योजना में वर्ष 2023–24 में एक लाख 30 हजार 303 ट्रांसफार्मर स्थापित किये जा चुके हैं।ऊर्जा विभाग की महत्वाकांक्षी योजना अटल गृह ज्योति योजना में एक करोड़ से अधिक बिजली उपभोक्ताओं को और 26 लाख 59 हजार उपभोक्ताओं को अटल कृषि ज्योति योजना में लाभान्वित किया जा रहा है। अटल गृह ज्योति योजना में प्रदेश

के ऐसे सभी घरेलू उपभोक्ताओं को योजना का लाभ दिया जा रहा है, जिनकी मासिक खपत 150 यूनिट तक है।

अटल कृषि ज्योति योजना में 10 हार्स पॉवर तक के मीटर रहित स्थाई कृषि पंप कनेक्शनों को 750 रूपये प्रति हार्स पॉवर प्रतिवर्ष एवं 10 हार्स पॉवर से अधिक के मीटर रहित स्थाई कृषि पंप कनेक्शनों को 1500 रूपये प्रति हार्स पॉवर प्रतिवर्ष की फ्लेट दर से बिजली दी जा रही है। साथ ही 10 हार्स पॉवर तक के मीटरयुक्त स्थाई कृषि पंप कनेक्शन एवं अस्थाई कृषि पंप कनेक्शनों को भी ऊर्जा प्रभार में रियायत दी गई है।विद्युत संबंधी विषयों के त्वरित निराकरण के लिए विभिन्न विभागों से समन्वय के लिये राज्य स्तरीय विद्युत अंतर्विभागीय समिति का गठन किया गया है। समिति उपभोक्ताओं द्वारा विद्युत उपभोग की प्रवृत्ति में सकारात्मक परिवर्तन करने और प्रभावी राजस्व प्रबंधन में सहयोग करेगी। इसके अतिरिक्त समिति विद्युत उपभोक्ताओं के संबंध में पृथक–पृथक शासकीय विभागों द्वारा संधारित जानकारी एकत्रित करेगी, जिसमें डाटा एनालिसिस के आधार पर सक्षम व समर्थ उपभोक्ताओं की पहचान की जा सकेगी। जिनके द्वारा जानबूझकर विद्युत बकाया का भुगतान नहीं किया जा रहा है अथवा अन्य पद्धतियों से विद्युत बिल अनियमित तरीके से कम किया जा रहा है, की पहचान करेगी। विद्युत चोरी पकडने एवं बकाया राशि की वसूली के दौरान विद्युत कार्मिकों के साथ अभद्र व्यवहार की स्थिति में त्वरित वैधानिक कार्रवाई सुनिश्चित कर सुरक्षा प्रदान करने में सहयोग करेगी। समिति शासकीय विभागों व शासकीय अधिकारियोंध्कर्मचारियों पर विद्युत कंपनी की बकाया राशि का भुगतान सुनिश्चित करेगी। समिति अवैध कॉलोनियों सहित अन्य रहवासी क्षेत्रों में विद्युत चोरी की रोकथाम के लिये जागरूकता अभियान तथा विद्युत अधोसंरचना के विकास के लिये प्रभावी कार्रवाई भी करेगी।

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में सप्लाई संबंधी, जलेध्खराब ट्रांसफार्मरों व विद्युत लाइन अवरोधों एवं गलत देयकों की शिकायतों को दर्ज कर समय–सीमा में निराकरण किया गया। जबलपुर, भोपाल एवं इन्दौर में स्थापित केन्द्रीयकृत 1912 कॉल सेंटर सेवा को सुदृढ़ किया गया है। जनवरी 2019 से मार्च 2024 तक विद्युत प्रदाय संबंधी 1 करोड़ 79 लाख 45 हजार 164 शिकायतें प्राप्त हुई हैं। इन सभी शिकायतों को निराकृत किया गया है।शिकायतों के निराकरण उपरांत समीक्षा की व्यवस्था प्रारंभ की गई है। इसके तहत तीनों कॉल सेंटर से प्रति कंपनी प्रतिदिन 500 शिकायतकर्ताओं से संपर्क कर उनकी संतुष्टि जांच की जाती है। उपभोक्ता संतुष्टि प्रतिशत 98.75 पाया गया।

प्रदेश में औद्योगिक व उच्च दाब (एचटी) विद्युत उपभोक्ताओं, निम्न दाब (एलटी) औद्योगिक और गैर घरेलू उपभोक्ताओं (जिनका लोड 10 किलोवाट से अधिक है) के लिए नये विद्युत टैरिफ में दिन के समय में (सौर ऊर्जा अवधि के घंटों के दौरान) सुबह 9 से शाम 5 बजे तक की गयी खपत पर ऊर्जा प्रभार में 20 प्रतिशत की छूट तथा शाम 5 से रात्रि?10 बजे के दौरान की गयी ऊर्जा खपत पर 20 प्रतिशत का सरचार्ज लागू किया गया है। इससे उपभोक्ताओं को दिन के समय खपत करने पर उनके विद्युत देयकों में कमी आयी है, साथ ही उच्चतम मांग अवधि के दौरान कोयला आधारित विद्युत की मांग पर नियंत्रण हो रहा है। उन्होंने बताया है कि विद्युत वितरण कंपनियों की इस योजना से प्रदेश के कुल 10025 औद्योगिक एवं उच्च दाब उपभोक्ता लाभान्वि?त हुए हैं। इनको प्रदेश की तीनों विद्युत वितरण कंपनियों द्वारा अप्रैल से अब तक 310 करोड़ 66 लाख रूपए का रिबेट प्रदान किया गया है।प्रदेश की घोषित एवं अघोषित अवैध कॉलोनियों के रहवासियों को स्थायी विद्युत कनेक्शन देने के लिये आवश्यक अधोसंरचना निर्माण की लागत के भुगतान में राहत देने हेतु ष्सुगम विद्युत (सुविधा) योजना–2024ष लागू की गई है। योजना में आवेदक या आवेदकों के समूह को निर्धारित राशि का न्यूनतम 25 प्रतिशत आवेदन के साथ एकमुश्त देना होगा। शेष राशि का भुगतान कनेक्शन चालू होने के बाद मासिक बिल के साथ ब्याज सहित किया जा सकेगा।

प्रदेश के उच्चदाब एवं निम्नदाब श्रेणी के औद्योगिक एवं वाणिज्यिक उपभोक्ताओं की सुविधा के लिये स्थायी रूप से विच्छेदित विद्युत कनेक्शनों को पुनरू जोड़ने एवं बकाया राशि के भुगतान में राहत तथा नवीन औद्योगिक एवं वाणिज्यिक आवेदकों को आवश्यक अधोसंरचना निर्माण की लागत के भुगतान में राहत देने के लिये ष्उद्योग मित्र योजना–2024ष लागू की गई है। यह योजना 2 वर्षों के लिये प्रभावशील रहेगी।

योजना में उपभोक्ताओं को स्थाई विच्छेदन के दिनांक पर देय कुल बकाया राशि का न्यूनतम 20 प्रतिशत भुगतान कनेक्शन जोड़ने के पूर्व एक मुश्त देना होगा। शेष राशि का भुगतान मासिक बिल के साथ ब्याज सहित अधिकतम 3 वर्ष में किया जा सकेगा।लोक सेवा प्रबंधन विभाग द्वारा सीएम हेल्पलाइन पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों के निराकरण की स्थिति के आधार पर जारी ग्रेडिंग में ऊर्जा विभाग लगातार प्रथम स्थान पर बना हुआ है। ऊर्जा विभाग 52 विभागों की जारी ग्रेडिंग में जून 2023 से अगस्त 2024 तक लगातार प्रथम स्थान पर है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देशानुसार संकल्प पत्र के तहत ऊर्जा विभाग भी करीब 4300 भर्ती करेगा। इसके लिए ऊर्जा विभाग ने मप्र पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी इंदौर को भर्ती के लिए नोडल कंपनी नामित किया है। इन भर्तियों से सभी कंपनियों, विशेषकर वितरण कंपनियों में कार्मिकों की कमी काफी हद तक पूर्ण हो जाएगी। साथ ही उपभोक्ता सेवाओं में बढ़ोत्तरी होगी।

अच्छी फिल्में बने तो थिएटर आने को तैयार हैं

पंकज दुबे

तुम्बाड देखना एक ऐसा अनुभव है, जो आपको डराता भी है, सोचने पर मजबूर भी करता है, और सिनेमाई स्तर पर गहरे तक छू जाता है। इसमें छोटी से छोटी चीज का भी एक अर्थ है। फिल्म की सिनेमेटोग्राफी, सेट डिजाइन, और कलर पैलेट– सब आपस में एक गहरे संबंध में बंधे हुए हैं। बारिश, कीचड़ और अंधेरे का उपयोग फिल्म के माहौल को और गहराई देता है। यह ऐसा है, जो फिल्म को एक अलग ही स्तर पर ले जाता है। तुम्बाड्य अपनी नैरेटिव की क्लासिकी के लिए भी हमेशा याद रखी जाएगी।हिंदी फिल्म उद्योग में 2024 में एक नई शुरुआत यह हुई है कि बहुत–सी अच्छी, सार्थक और लोकप्रिय फिल्मों को सिनेमाघरों में एक बार फिर से रिलीज किया जा रहा है। इस शृंखला में अब तक तेजाब (1988), मैंने प्यार किया (1989), ताल (1999), रहना है तेरे दिल में (2001), वीर जारा (2004), रॉकस्टार (2011), गैंग्स ऑफ वासेपुर (2012) के साथ–साथ 2018 की एक दिलचस्प फिल्म तुम्बाड्य को भी फिर से रिलीज किया गया है। इस ट्रेंड ने सिनेमाघरों में जाकर फिल्में देखने वाले दर्शकों में एक नया उत्साह भरा है।तुम्बाड्य एक पीरियड हॉरर फिल्म है, जो राही अनिल बर्वे द्वारा निर्देशित है। फिल्म के लेखक हैं मितेश शाह, आदेश प्रसाद और आनंद गांधी। इस फिल्म में आनंद गांधी ने क्रिएटिव डायरेक्टर के रूप में भी काम किया है।तुम्बाड्य की दोबारा रिलीज इसके दर्शकों के लिए सिनेमाघरों में एक बार फिर से एक अनोखा अनुभव लेकर आई है। इसने उन दर्शकों का भी ध्यान अपनी तरफ खींचा है, जिन्होंने पहले यह फिल्म मिस कर दी थी। तुम्बाड आज भी उतनी ही प्रभावशाली और जादुई लगती है, जितनी पहले थी।

तुम्बाड्य की कहानी महाराष्ट्र की एक प्राचीन लोककथा पर आध ाारित है। यह कहानी लालच, रहस्य और भय का ऐसा मेल है कि दर्शकों के मन में कई सवाल उठाती है और बुनियादी ह्यूमन इंस्टिंक्ट्स के इर्द–गिर्द सोचने पर मजबूर करती है। यह फिल्मकार का कौशल ही है कि वह दर्शकों को बखूबी हस्तरय के किरदारों का जीवंत साक्षी बना देता है। साथ ही वह तुम्बाड की रहस्यमयी दुनिया में डर के साथ–साथ कहानी की गहराई को भी बढ़ाता है।तुम्बाड्य की कहानी ध ारती माता के पुत्र हस्तर देवता पर आधारित है। वास्तविक जीवन में भगवान हस्तर के बारे में कोई भी ग्रंथ या लोककथा ढूंढ पाना मुश्किल है। फिल्म में हस्तर के बारे में बताया गया है कि वह उस देवी का सबसे प्रिय पुत्र है, जिसने सभी देवी देवताओं को जन्म दिया। फिल्म में हस्तर को एक पौराणिक देवता के रूप में दिखाया गया है, जो धन और अनाज का देवता है। फिल्म की कहानी के अनुसार, हस्तर एक लालची और स्वार्थी देवता था, जिसने अपने हिस्से से हमेशा ज्यादा की चाह रखी। उसने देवी के खजघने से सारा सोना ले लिया और फिर सारा अनाज भी लेना चाहा लेकिन, दूसरे देवताओं ने उसे अनाज नहीं लेने दिया। उस पर हमला कर दिया। बाद में उसे अनाज से वंचित कर दिया गया। इसके अलावा उसे धार्मिक ग्रंथों से गायब कर दिया गया और पूरी दुनिया उसके बारे में भूल गई। फिल्म के अनुसार, हस्तर अभी भी अपनी मां की कोख में कैद है।

हस्तर के बारे में कहा गया कि उसका नाम नहीं लेना चाहिए, उसका नाम लेने से विनाश हो सकता है। वहीं, हस्तरय का सिर किसी ऑक्टोपस जैसा था, पंख किसी चमगादड़ जैसे थे और आंखें सुनहरी थीं। हस्तरय हमेशा एक पीले रंग के कपड़े से ढका रहता था।तुम्बाड्य देखना एक ऐसा अनुभव है, जो आपको डराता भी है, सोचने पर मजबूर भी करता है, और सिनेमाई स्तर पर गहरे तक छू जाता है। इसमें छोटी से छोटी चीज का भी एक अर्थ है। फिल्म की सिनेमेटोग्राफी, सेट डिजाइन, और कलर पैलेट– सब आपस में एक गहरे संबंध में बंधे हुए हैं। बारिश, कीचड़ और अंधेरे का उपयोग फिल्म के माहौल को और गहराई देता है। यह ऐसा है, जो फिल्म को एक अलग ही स्तर पर ले जाता है। तुम्बाड्य अपनी नैरेटिव की क्लासिकी के लिए भी हमेशा याद रखी जाएगी।

हम इस फिल्म में कलाकारों की परफॉरमेंस की बात करें तो इसमें सभी किरदार है यादगार हैं। सोहम शाह ने विनायक का किरदार बड़ी गहराई से निभाया है। विनायक का लालच और उसकी आंखों में दिखने वाला जुनून दर्शकों पर गहरा प्रभाव छोड़ता है। इसके अलावा बाकी कलाकारों ने भी अपने–अपने किरदार को पूरी शिद्दत से निभाया है। हर किरदार का अभिनय इतना प्रभावशाली है कि वो कहानी में जीवंत लगते हैं।

तुम्बाड्य का म्यूजिक और साउंड डिजाइन फिल्म का ध ाड़कता हुआ दिल है। फिल्म का बैकग्राउंड स्कोर और साउंड डिजाइन इतना प्रभावशाली है कि इस स्पेस में बनने वाली कई फिल्मों के लिए बखूबी रिफरेन्स के काम आ सकती है। फिल्म में अजय–अतुल का शानदार म्यूजिक कहानी को और मजबूत बनाता है और हर सीन को बेहद इंटेंस और डरावना बनाता है। एक–एक साउंड इफेक्ट में इतनी बारीकी है कि यह दर्शकों को कहानी के भीतर खींच लेता है।फिल्म में गाना बेशक एक ही है लेकिन वो कहानी को और गहराई देता है। इस इकलौते गीत के बेहद सार्थक गीतकार हैं राज शेखर। तुम्बाड्य में म्यूजिक का उद्देश्य मनोरंजन से अधिक कहानी के मूड को बढ़ाना है।अच्छी फिल्मों को फिर से थिएटर में रिलीज करने के ट्रेंड को दर्शक खुले दिल से अपना रहे हैं। तुम्बाड्य जैसी मास्टरपीस को बड़े पर्दे पर देखने का अनुभव घर में देखने से एकदम अलग है। ऑडियंस का रिस्पॉन्स देखकर लगता है कि अच्छी फिल्मों की कद्र अभी भी बाकी है, और तुम्बाड्य जैसी फिल्मों का आकर्षण कभी खत्म नहीं होता। साथ ही दर्शकों का रिस्पांस उस विवाद को भी विराम देता है कि कोविड के फलस्वरूप जो लॉकडाउन हुआ था उसने दर्शकों की कॉन्टेंट कंजम्पशन के पैटर्न को बदल कर रख दिया है और अब वो सिनेमा हॉल तक नहीं जाना चाहते हैं। लेकिन अच्छी पुरानी फिल्मों को देखने जाने वालों की भीड़ ने स्पष्ट इशारा कर दिया है कि वो थिएटर तक आने के लिए तैयार हैं, बस अच्छी फिल्में तो बनाई जाएं।

सड़कों के मरम्मत की गुणवत्ता की करायी जाये जांच-डीएम

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जल जीवन मिशन की बैठक सम्पन्न

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी शिव सहाय अवस्थी जी की अध्यक्षता में शुक्रवार को देर सायंकल कैम्प कार्यालय सभागार में जल जीवन मिशन के अन्तर्गत सम्पादित कराये जा रहे विभिन्न कार्यो की समीक्षा की गयी। बैठक में जिलाधिकारी ने जल जीवन मिशन हेतु नामित एजेंसियो के प्रोजेक्ट मैनेजर/प्रतिनिधियों से जनपद में संचालित सभी परियोजनाओं के बारे में बिंदुवार जानकारी ली एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिए। बैठक में जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि पाइप लाइन बिछाने के उपरान्त जिन सड़कों की मरम्मत की गयी है वह गुणवत्तापूर्ण है या नही उसकी जांच करायी जाये। बैठक में बताया गया कि फेज–2 के अन्तर्गत जमीन की उपलब्धता के प्रकरण है जिस पर जिलाधिकारी ने कहा कि ग्राम व तहसीलवार सूची उपलब्ध करा दें जिससे जमीन के प्रकरणों का निस्तारण और कार्य को समय से कराया जा सके। उन्होने कहा कि ट्यूबवेल लगने वाले स्थानों का चिन्हित कर लें और 31 मार्च तक ट्यूबवेल के कार्य को पूर्ण किया जाये। अधिशासी अभियन्ता जल निगम को निर्देशित किया गया कि सोलर पैनल का जो लक्ष्य दिया गया है उसे 31 अगस्त तक अवश्य पूर्ण कर लें। उन्होंने कार्यदायी संस्थाओं को निर्देश दिए की सभी परियोजनाओं का कार्य अति शीघ्र पूर्ण किया जाए, सभी घरों को जल जीवन मिशन के अंतर्गत पाइपलाइन

से जोड़ा जाए कोई भी गांव, मजरा अथवा घर कनेक्शन से छूटने न पाए तथा पाइपलाइन बिछाने के दौरान खोदी गई सड़कों को शीघ्र अति शीघ्र गुणवत्तापूर्ण ढंग से रिपेयर किया जाए। उन्होंने सभी कार्यदायी संस्थाओं को निर्माण कार्य की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देते हुए निर्धारित समय सीमा के अंतर्गत कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने जल जीवन मिशन के प्रचार प्रसार हेतु नामित संस्थान के प्रतिनिधियों के कार्यो की जानकारी ली तो पाया गया कि नामित संस्थान के भुगतान 02 वर्षो से लम्बित है जिस पर जिलाधिकारी ने मुख्य विकास अधिकारी से कहा कि भुगतान सम्बन्धी बैठक अलग से कर ली जाये यदि कार्य हुआ है तो भुगतान की कार्यवाही की जाये और यदि कोई समस्या आ रही है तो अवगत कराया जाये। अधिशासी अभियन्ता जल निगम को निर्देशित किया गया कि पत्रावलियों को लम्बित न रखें, जो भी कार्य हुये है समय से भुगतान करना सुनिश्चित करें और अगली बैठक में तैयारियों के साथ उपस्थित हो। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी डा0 दिव्या मिश्रा, अधिशासी अभियन्ता जल निगम अजय कुमार उपाध्याय सहित कार्यदायी संस्थाओं के प्रोजेक्ट मैनेजर/प्रतिनिधि व अन्य सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहे।

कृषि सेवा परीक्षा में सीएसए के छात्र टॉप मेरिट में छाए

कानपुर । सीएसए अपने प्रारंभिक काल से अद्यतन देश की कृषि व्यवस्था शोध एवं प्रसार में अग्रणी स्थान पर रहा है।और यहां के छात्र एवं छात्राएं मजबूती से इस परंपरा का निर्वहन कर रहे हैं। अपने प्रदेश में ही नहीं बल्कि दूसरे प्रदेशों में भी यहां के छात्र अपना स्थान टॉप मेरिट में बनाकर विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं विश्वविद्यालय के निदेशक सेवायोजन प्रोफेसर डॉक्टर विजय कुमार यादव ने अवगत कराया कि बिहार लोक सेवा आयोग से कृषि सेवा द्वितीय श्रेणी के अंतर्गत अनुमंडल कृषि अधिकारीध्उप परियोजना निदेशकध् सहायक निदेशक के पदों पर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के 8 छात्र–छात्राओं ने उच्च सफलता प्राप्त की है यहां की छात्र सोमपाल ने बिहार प्रदेश में प्रथम स्थान पर विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया है वहीं राहुल त्रिपाठी ने 16वें,रोशन पटेल ने 24 वें, रविकांत पटेल ने 31वें, जयकार सिंह ने 57वा,मनोज कुमार ने 60वां और कमलकांत यादव ने 72वां स्थान प्राप्त किया है। इसके साथ ही प्रखंड कृषि पदाधिकारी के पद पर लगभग 35 छात्र छात्राओं ने भी टॉप लिस्ट में सफलता प्राप्त की है जिसमें नीरज कुमार ने द्वितीय, ऋषिकेश यादव ने आठवां, रामवीर सिंह यादव ने 13वां अर्जुन ने 16वा,आशीष मोहन तिवारी ने 43वां, दीपू ने 49वा,वैभव पांडे ने 58वा ,सुधीर कुमार पाल ने 66वां, मनीष कुमार मौर्य ने 74वां, अभिनव यादव ने 77वां, रविंद्र सचान ने 89वा, अंकित प्रजापति 107 वा, राकेश कुमार 116वा,करण कुमार शर्मा 122वा, गौरव वर्मा ने 125वा, चंदन कुमार 146वा, राकेश कुमार 153, इशिका साहू 171, आयुष मिश्रा 172वा, हर्ष पटेल 178वा,श्याम सिंह 180वा, राजन वर्मा 184, अजहा जुल्फिकार 194, दिलीप कुमार 231, पंकज कुमार राजपूत 237,अंकित उपाध्याय 245, जुनैद अख्तर 253, प्रवीण कुमार यादव 267, विनोद कुमार 272, अर्चना उपाध्याय 281, कीर्ति सिंह 209 एवं ने प्रेमचंद 1353 वा स्थान प्राप्त किया है दूसरे प्रदेश में विश्वविद्यालय के छात्राओं द्वारा अद्वितीय सफलता प्राप्त करने पर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह ने सभी चयनित छात्र छात्राओं को हार्दिक बधाइयां देते हुए हर्ष व्यक्त किया है और इस सभी छात्र छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना की है।

कार्यो में अनियमितता की शिकायत

लालगंज प्रतापगढ़(आरएनएस)। समाधान दिवस में दीवानी वार्ड निवासी अधिवक्ता अनिल त्रिपाठी महेश ने वार्ड के अंदर माडल तालाब के निर्माण में अनियमितता को लेकर शिकायती पत्र सौंपा है। वहीं शिकायती पत्र में अधिकारियों व कर्मचारियों की ठेकेदार के साथ मिलीभगत को लेकर नाली निर्माण मे भी घटिया सामग्री के प्रयोग की बात कही गयी है। एसडीएम नैंनसी सिंह ने नगर पंचायत अधिशाषी अधिकारी से जांच कर आख्या तलब की है।

संक्षेप

सभासद के पिता का निधन

लालगंज प्रतापगढ़(आरएनएस)। नगर पंचायत के बाजार खास वार्ड के सभासद आशीष कौशल के पिता विजय 62 का लम्बी बीमारी के चलते शुक्रवार की देर शाम आकस्मिक निधन हो गया। निधन की जानकारी मिलते ही बाजार में शोक छा गया। क्षेत्रीय विधायक एवं कांग्रेस विधानमण्डल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना तथा राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने बाजार अंदर निवासी विजय के निधन पर परिजनों से फोनिक वार्ता कर शोक जताया। उद्योग व्यापार मण्डल अध्यक्ष उदयशंकर दुबे, चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी, सभासद दारा सिंह, ज्ञानप्रकाश शुक्ल, गौरीशंकर पाण्डेय, राजकुमार मिश्र, अंजनी कौशल, जय कौशल, डा0 ओमप्रकाश जायसवाल आदि ने भी वरिष्ठ व्यापारी के निधन पर बैठक में श्रद्धांजलि अर्पित की।

मंहगाई से परेशान हैं महिलायें

लालगंज प्रतापगढ़।(आरएनएस) महिला कांग्रेस की शनिवार को यहां हुई बैठक में संगठनात्मक गतिविधियों को तेज करने पर विचारविमर्श हुआ। ब्लाक महिला कांग्रेस की अध्यक्ष पूनम द्विवेदी ने कहा कि भाजपा सरकार में मंहगाई की सबसे बड़ी पीड़ा महिलाओं को झेलनी पड़ रही है। उन्होनें कहा कि मंहगाई तथा महिलाओं के ऊपर रोज हो रहे अत्याचार के खिलाफ गांव स्तर पर जागरूकता के संघर्ष का मिशन तेज किया जाएगा। संचालन महासचिव पूनम सिंह ने किया। इस मौके पर किरन पटेल, विद्या मिश्रा, धर्मावती गौतम, चटकीला देवी, कल्पा वर्मा, शबनम आदि रहीं।

मारपीट व धमकी का केस दर्ज

लालगंज प्रतापगढ़(आरएनएस)। कोतवाली पुलिस ने जमीनी विवाद को लेकर हुई मारपीट में चार आरोपियों के खिलाफ गालीगलौज तथा मारपीट व धमकी का केस दर्ज किया है। लालगंज कोतवाली के पूरे शिवावैश्य निवासी अमर बहादुर सिंह पुत्र विजय बहादुर सिंह ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि शुक्रवार की शाम साढ़े पांच बजे जांगरा साधोराम निवासी आरोपी गुडडू द्विवेदी, पुष्पेंद्र द्विवेदी, अतुल द्विवेदी तथा देवेन्द्र ने जमीनी विवाद को लेकर गालीगलौज शुरू कर दी। मना करने पर आरोपियों ने लाठी डण्डे से हमला बोल दिया। शोर मचने पर लोगों को जुटता देख आरोपी जानलेवा धमकी देते चले गये। तहरीर के आधार पर पुलिस ने आरोपी गुडडू समेत चार के खिलाफ केस दर्ज किया है।

वृद्ध की मौत, कोहराम

लालगंज प्रतापगढ़(आरएनएस)। वृद्ध की आकस्मिक मौत पर परिजनों में कोहराम मच गया। सांगीपुर थाना क्षेत्र के नौबस्ता निवासी देवदत्त के पुत्र उदय नारायण मिश्र 85 शुक्रवार की सुबह बाबा घुइसरनाथ धाम दर्शन करने गये थे। काफी देर बाद मंदिर के पीछे उन्हें लोगों ने घायलावस्था में पड़ा देखा। वृद्ध के सिर में चोट लगी थी। परिजन इलाज के लिए उसे जिला अस्पताल ले गये। देर शाम अस्पताल में इलाज के दौरान वृद्ध की मौत हो गयी। जिला अस्पताल से परिजन शव को घर लेकर आ गये। देर रात सूचना पर सांगीपुर पुलिस पहुंची। पुलिस ने शव का पंचनामा कर उसे पीएम के लिए भेजवाया। वृद्ध की मौत से परिजनों में कोहराम मच गया।

विधायक ने मुख्यमंत्री से की मुलाकात

महोलीध्सीतापुर(आरएनएस) अपने क्षेत्र के विकास के लिए लगातार विधायक शशांक त्रिवेदी लखनऊ में मंत्रियों व अधिकारियों से संपर्क करते रहते हैं। क्षेत्र के विकास के लिए विधायक शशांक त्रिवेदी ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात की। विधायक शशांक त्रिवेदी ने बताया कि उन्होंने महाराज जी से महोली में बस स्टैंड और डिग्री कॉलेज की मांग प्रमुखता से की है। वही अन्य विकास कार्यों को लेकर महाराज जी से बिस्तार में बात हुई है। उन्होंने मुझे आश्वासन देते हुए कहा है कि आपके द्वारा जो भी मांगे की गई है जनहित को देखते हुए उन्हें शीघ्र पूरा कराया जाएगा। वहीं विधायक ने बताया कि क्षेत्र में सड़के,पुल स्कूल व अस्पताल खोलने के लिए महाराज जी आग्रह किया गया है। उन्होंने मेरे आग्रह पर कार्य पूरा करने का आश्वासन दिया है।

मादक पदार्थ में 10 माह की कैद

सीतापुर(आरएनएस)। न्यायालय अपर सत्र न्यायाधीश फास्ट ट्रैक कोर्ट न्यू ने मादक पदार्थ अधिनियम के मामले में दोषी को सजा सुनाई है। न्यायाधीश ने आरोपी को 10 माह की सजा सुनाई है। वही 4 हजार रुपये का अर्थदण्ड लगाया है। वर्ष 2021 में तालगांव थाने में तालगांव थाना क्षेत्र के ग्राम बहतालिया निवासी उत्तम पुत्र छेदीलाल के खिलाफ पुलिस ने एनडीपीएस आदि धाराओं में केस दर्ज किया था। इस मामले की सुनवाई करते हुए अपर सत्र न्यायाधीश फास्ट ट्रैक कोर्ट न्यू ने सबूत को देखने, गवाहों और दोनों पक्ष के वकीलों की बहस सुनने के बाद उत्तम को दोषी करार दिया । न्यायाधीश ने उत्तम को 10 माह कारावास की सजा सुनाई है। वही 4 हजार रुपये का अर्थ दंड भी लगाया है।

जनता जनार्दन के सपनों को पूरा करने वाला बजट–अभिषेक गुप्ता

सीतापुर(आरएनएस)। मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल का पहला पूर्ण बजट आज संसद में पेश किया गया। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण लगातार आज 8वीं बार बजट पेश कर इतिहास रचा। वित्त मंत्री ने आम लोगों के लिए कई बड़ी घोषणाएं कीं। खैराबाद नगरपालिका अध्यक्ष प्रतिनिधि अभिषेक गुप्ता ने बजट का स्वागत करते हुए बताया यह बजट युवा, गरीब, किसान, महिलाओं के साथ–साथ समाज के सभी वर्गों और क्षेत्रों के विकास को बढ़ावा देने वाला है। खासकर मिडिल क्लास के योगदान का ध्यान रखते हुए यह बजट अभूतपूर्व तोहफा लेकर आया है।. बारह लाख रुपये तक की वार्षिक आय पर आयकर से राहत दिए जाने के निर्णय उत्साहजनक है। मैं पीएम नरेंद्र मोदी जी और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण जी को एक शानदार बजट पेश करने के लिए बधाई देना चाहता हूं।

छेंड़छाड़ का किया प्रयास

महमूदाबादध्सीतापुर(आरएनएस)। एक युवक ने शुक्रवार की शाम किशोरी से छेंड़छाड़ का प्रयास किया। विरोध करने पर युवक ने जान से मारने की नियत से किशोरी का मुंह व गला दबाना शुरू कर दिया। शोर सुनकर दौड़े ग्रामीणों को आता देख किशोरी को अधमरा छोंड़ जान से मारने की धमकी देते हुए आरोपी भाग निकला। किशोरी की मां की तहरीर पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ केस दर्जकर आरोपी की जानलेवा हमला करने, छेंड़खानी, जान से मारने की धमकी देने के आरोप में जेल भेज दिया है। सदरपुर के एक गांव निवासिनी 12 वर्षीय किशोरी शुक्रवार की शाम बाजार गई थी। आरोप है गांव का ही निवासी बबलू कुरेंसी पुत्र कुन्नू किशोरी को गोभी घर रखवाने के बहाने फार्मेसी की ओर ले गया और सूनसान स्थान पर गलत नियत से छेड़खानी करने लगा। किशोरी द्वारा विरोध करते हुए शोर मचाने पर बबलू ने उसका जान से मारने की नियत से गला व मुंह दबाना शुरू कर दिया। शोर सुनकर दौड़े ग्रामीणों को आता देख बबलू किशोरी को अधमरा छोंड़कर भाग निकला। किशोरी की मां ने पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की।

आईएमए क्रिकेट प्रीमियर लीग के संबंध में प्रेसवार्ता का हुआ आयोजन

कानपुर(आरएनएस) । आईएमए कानपुर शाखा द्वारा गुरुवार को आईएमए कानपुर द्वारा आयोजित होने वाली आईएमए क्रिकेट प्रीमियर लीग के संबंध में एक पत्रकार वार्ता का आयोजन ष्सेवा मंदिरष, आईएमए कार्यालय, 37ध्7 परेड में किया गया इस प्रेस कॉन्फ्रेंस को डॉ. अमित सिंह गौर, उपाध्यक्ष एवं इंचार्ज स्पोर्ट्स सब कमेटी, डॉ. विकास मिश्रा, सचिव, डॉ. बृजेंद्र शुक्ला, चेयरमैन, स्पोर्ट्स सब कमेटी, डॉ. संजय गुप्ता, को चेयरमैन, स्पोर्ट्स सब कमेटी, डॉ. दीपक श्रीवास्तव वित्त सचिव एवं प्रोग्राम संयोजक, डॉ निशांत सौरभ सक्सेना, क्रीड़ा सचिव, डॉ. मानव लूथरा, संयुक्त क्रीड़ा सचिव कानपुर ने संबोधित किया टीम आईएमए 2024–25 की क्रीड़ा सब कमेटी को यह बताते हुए खुशी हो रही है कि ष्आईएमए क्रिकेट प्रीमियर लीग– सीजन 2ष का आयोजन शनिवार और रविवार, 1 और 2 फरवरी, 2025 को सुबह 9रू00 बजे से रात 9रू00 बजे तक श्टीएसएच पालिका स्टेडियमश, बेनाझवर (बृजेंद्र स्वरूप पार्क), कानपुर में खेल जाएगा इस आईपीएल–सीजन–2 में कुल 5 टीमें भाग ले रही हैं जिनके नाम है कनिष्क किंग्स, रीजेंसी रॉयल्स, पारस पैंथर्स, फॉर्च्यून लायंस, साउथ लीजेंड्स इस क्रिकेट टूर्नामेंट में 14–14 ओवर के कुल 11 लीग मैच होगे (दोनों दिन 5ध्6 मैच खेले जाएंगे)।इस टूर्नामेंट की प्रत्येक टीम में दो महिला खिलाड़ी, दो 50 आयु वाले पुरुष खिलाड़ी और एक आईएमए सदस्य का बेटा बेटी (18 वर्ष से अधिक आयु) और 10 अन्य खिलाड़ी 15 सदस्यीय टीम का हिस्सा होंगे प्रेस–वार्ता में कनिष्क किंग्स के कप्तान डॉ. रवि गर्ग, पारस पैंथर्स के कप्तान डॉ. सौरभ सक्सेना, फॉर्च्यून लॉयंस के कप्तान डॉ. फहीम अंसारी, रीजेंसी रॉयल्स के कप्तान डॉ. विनीत रस्तोगी एवं साउथ लीजेंड्स के कप्तान डॉ. अनिकेत त्रिपाठी उपस्थित रहे।

संदिग्ध हालत में विवाहिता का फंदे से लटकता मिला शव

आजमगढ़। रौनापार थाना क्षेत्र के बाढ़ू का पूरा गांव में शुक्रवार की देर शाम घर में फंदे के सहारे विवाहिता का लटकता हुआ शव देख सनसनी फैल गई। घटना की जानकारी मिलते ही ग्रामीणों की भीड़ जुट गई। मौके पर पहुंची पुलिस जांच पड़ताल करते हुए शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज विधिक कार्रवाई में जुट गई।

रौनापार के बाढ़ू का पूरा गांव निवासी 30 वर्षीय गीता यादव अपने तीन बच्चों व सास ससुर के साथ घर पर रहती थी। पति रवि यादव अपने छोटे भाई सुनील यादव के साथ चंडीगढ़ में टाइल्स का काम करते हैं। एक माह पूर्व ही दोनों भाई खेत की जुताई बुवाई के लिए घर आए हैं। दिन में ही दोनों भाई अपने बहनोई के घर तेरही के कार्यक्रम में शामिल होने के लिए गए थे। इधर गीता यादव अपने बच्चों को मोबाइल देकर कमरे में सोने के लिए चली गई।

एसडीएम को सौंपा ज्ञापन, 10 दिन का दिया अल्टीमेटम

हैदरगढ़ बाराबंकी। रेलवे स्टेशन हैदरगढ़ पर ट्रेन ठहराव की मांग को लेकर भारतीय किसान यूनियन (राष्ट्रीयतावादी) ने प्रशासन को अल्टीमेटम दे दिया है। जिलाध्यक्ष विधि चंद यादव के नेतृत्व में संगठन के सदस्यों ने शुक्रवार को एसडीएम को ज्ञापन सौंपा। जिलाध्यक्ष विधि चंद यादव ने बताया कि पहले भी इस मुद्दे पर धरना–प्रदर्शन किया गया था, जिस पर प्रशासन ने 15 दिनों में समाधान का आष्वासन दिया था। लेकिन 21 दिन बीत जाने के बाद भी कोई कार्रवाई नहीं की गई। इस पर नाराजगी जताते हुए संगठन ने प्रशासन को 10 दिन का अल्टीमेटम दिया है।भाकियू नेता ने चेतावनी दी है कि यदि इस अवधि में ट्रेन ठहराव सुनिश्चित नहीं किया गया। तो संगठन फिर से धरना–प्रदर्शन करेगा और आवश्यकता पड़ने पर चक्का जाम भी करेगा। ज्ञापन सौंपने के दौरान सहबल, बजरंग, बेचनलाल, प्रियंका, रोहित, राजकुमारी, शिवप्रसाद सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे।

केक काटकर मनाया बीमा दिवस

अयोध्या(आरएनएस)। प्रधान डाकघर में अधिकारियों कर्मचारियों ने च्स्प् का 141वां दिवस केक काटकर जश्न मनाया इस दौरान मण्डल के प्रधान डाकघर की प्रभारी सीनियर पोस्टमास्टर सुमन पाण्डेय ने बताया कि

➢ डाक जीवन बीमा अपनाएं करें अपने सपनों को साकारः सत्येन्द्र प्रताप सिंह

देश के सरकारी सेवक को बीमा का लाभ देनें के लिए डाक जीवन बीमा योजना 1 फरवरी 1884 में प्रारम्भ किया गया धीरे धीरे इस पॉलिसी की लोकप्रियता बढ़ने से भारत सरकार ने विस्तार करते हुए डॉक्टर, इंजीनियर, वकील के साथ साथ स्नातक डिग्री धारक को भी इस पॉलिसी का लाभ देने के लिए इन्हें भी जोड़ा । इस डाक जीवन बीमा योजना में सभी बीमा कम्पनियों से कम किश्त और सभी से अधिक बोनस के साथ भुगतान देनें वाली डाक जीवन बीमा योजना भारत सरकार ने भारतीय डाक विभाग से लाभ देनें का निर्णय लिया गया । मुख्य विपणन अधिकारी सत्येन्द्र प्रताप सिंह ने बताया कि इस डाक जीवन बीमा योजना पर अन्य खर्चों को कम करके अधिक से अधिक भुगतान लाभ ग्राहक को दिया जाता है साथ साथ प्रत्येक माह अपने बैंक के खाते से स्वतः या ऑनलाइन तथा किसी

भी डाकघर में आसान किश्त जमा करने की सुविधा उपलब्ध कराया गया वार्षिक, अर्द्ध वार्षिक किश्तों को जमा करने पर छूट भी दिया जाता है । सरकारी कर्मचारियों के लिए (प्राइमरी व जूनियर हाईस्कूल आध्यपको) खास है डाक जीवन बीमा (च्स्प्) योजना क्योंकि किसी भी बीमा कम्पनी से कम किश्त एवं अधिक बोनस एवं 80ब के तहत आयकर में छूट भी पाए । विकास अधिकारी चन्द्रेश वर्मा ने बताया कि इस बीमा योजना की लोकप्रियता और आकर्षण को देखते हुए भारत सरकार ने देश के ग्रामीण किसान, आम नागरिक को ग्रामीण डाक जीवन बीमा का तोहफा वर्ष 1995 में दिया । इसमें अन्य किसी भी बीमा कम्पनियों से कम किश्त एवं अधिक बोनस देय है। मतलब आपका पूरा पैसा आपके पॉलिसी में तथा आयकर में छुट व लोन की भी सुविधा उपलब्ध है डिप्टी पोस्टमास्टर दीपक कुमार तिवारी, अतुल उपाध्याय, राहुल श्रीवास्तव, विनीत कुमार सिंह, जयशंकर प्रसाद वर्मा, दीपमाला, अंकिता सिंह, अनीता सिंह, अर्चना, चांदनी वर्मा, कविता यादव, मधु कुमारी आदि मौजूद रहे ।

टीबी कार्यालय का किया औचक निरीक्षण

कानपुर (आरएनएस)। जिलाधिकारी जितेन्द्र प्रताप सिंह द्वारा आज सुबह 10 रू30 बजे जिला पूर्ति कार्यालय का सुबह औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान कार्यालय परिसर में झाडू नहीं पाई गई तथा कार्यालय में चारों तरफ गंदगी व्याप्त थी, निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी द्वारा उपस्थिति रजिस्टर का अवलोकन किया गया। अवलोकन के दौरान एक कर्मचारी लिपिक अरबिंदु कटियार अनुपस्थित पाए गए । जिनके खिलाफ कार्यवाही किए जाने के निर्देश जिला पूर्ति अधिकारी को दिए।

तत्पश्चात् जिलाधिकारी द्वारा कार्यालय का निरीक्षण किया गया । निरीक्षण के दौरान कार्यालय में अवस्थित तरीके से बिजली के तारों का जाल फैला हुआ था तथा कार्यालय में पर्याप्त लाइट न होने के कारण कार्यालय में अंधेरा था जिसके संबंध में उन्होंने जिला पूर्ति अधिकारी को निर्देशित करते हुए कहा कि तारों को व्यवस्थित कराते हुए पर्याप्त लाइट लगाई जाने के निर्देश दिए। इस दौरान कार्यालय की अलमारी तथा फर्नीचर अव्यवस्थित पाया गया इसके दृष्टिगत उन्होंने जिला पूर्ति अधिकारी को निर्देशित करते हुए कहा कि 15 दिन के अंदर समस्त व्यवस्थाएं दुरुस्त करें उनके द्वारा पुनः निरीक्षण किया जाएगा। निरीक्षण के दौरान उन्होंने जिला पूर्ति अधिकारी को निर्देशित करते हुए कहा कि जिला पूर्ति कार्यालय में जगह – जगह प्लास्टर गिर रहा था इसके दृष्टिगत निर्माणाधीन साइड में प्रयोग की जाने वाली हरि जली को कार्यालय में लगाया जाए ताकि किसी प्रकार की अपरिहार्य स्थिति से बचा जा सके ।इसके बाद जिलाधिकारी द्वारा सिविल लाइन स्थित जिला

टीबी कार्यालय का भी औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान टीबी प्रभारी नोडल वज्ञअपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर सुबोध तथा 4 अन्य डॉक्टर अनुपस्थित पाए गए, जिसके संबंध में जिलाधिकारी द्वारा निर्देशित किया गया कि उनकी अनुपस्थित की जिम्मेदारी तय की जाए ।निरीक्षण के दौरान राजीव सक्सेना डी0पी0सी0, संजय मिश्रा अकाउंटेंट, महेंद्र प्रताप बी0सी0जी0, रुचि यादव बी0सी0जी0 अनुपस्थित पाए गए।

भाजपा कार्यकर्ताओं में शोक की लहर

आजमगढ़। लालगंज लोकसभा क्षेत्र भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता रणधीर सिंह चेवार की मांता सुशीला सिंह तथा अरुण सिंह चेवार के बाबा कल्पनाथ सिंह के देहावसान से भाजपा कार्यकर्ताओं में शोक की लहर। शोक संवेदना ब्यक्त करने वालों का लगा तांता। भारतीय जनता पार्टी के पूर्व मंडल अध्यक्ष, जिले के वरिष्ठ नेता अशोक कुमार राय व इंद्राज चौहान ने कहा कि मातृ पितृ शोक मनुष्य के जीवन का बहुत बड़ा शोक है। माता–पिता की छाया का जीवन में बड़ा महत्व होता है। माता–पिता रूपी वट वृक्ष की छाया का हट जाना मनुष्य के जीवन की अपूरणीय क्षति है। भारतीय जनता पार्टी प्रबुद्ध प्रकोष्ठ गोरखपुर क्षेत्र के पूर्व संयोजक ओमप्रकाश सिंह तिलखरा ने कहा कि माता और मातृभूमि का स्थान स्वर्ग से बढ़कर होता है। पिता तथा बाबा का स्थान आकाश से भी उच्च होता है ।ऐसे अभिभावकों का अभाव होना मनुष्य के लिए अपूरणीय क्षति है। इस अवसर पर भाजपा नेता अशोक कुमार राय चिरकिहिट ,इंद्राज चौहान, ओम प्रकाश सिंह,जेपी सिंह कंजहित, नीरज सिंह, विजेंद्र सिंह, पारस यादव,अनिल सिंह, कमलेश सिंह, अमरनाथ सिंह सहित आदि लोग विशेष रूप से उपस्थित थे।

मनाया गया अभ्युदय उत्सव

देवा, बाराबंकी(आरएनएस)। शिक्षा क्षेत्र देवा के प्राथमिक विद्यालय कुसुम्भा में अभ्युदय वार्षिक उत्सव मनाया गया कार्यक्रम में उपस्थित सभी सम्मानित अभिभावकों को रोली चंदन लगाकर परिसर में जोरदार स्वागत किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता एस एम सी की महिला उपाध्यक्ष विमला देवी ने की नन्हे मुन्ने बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये बच्चों के साथ उनके अभिभावक भी उपस्थित रहे कार्यक्रम कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों के नियमित उपस्थित व ठहराव ,स्वच्छता आदि पर अभिभावकों को प्रेरित किया गया एवं प्रतिदिन विद्यालय उपस्थित होने वाले छात्र–छात्राएं एवं उनके अभिभावकों को पुरस्कृत किया गया कार्यक्रम में दौड़ प्रतियोगिता हुई जिसमें नन्हे मुन्ने बच्चों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया बच्चों के लिए स्पेशल भोजन की व्यवस्था की गई। कार्यक्रम में कुर्सी दौड़, रास्सा कसी, आदि कार्यक्रम आयोजित किए गए।

जयंती को लेकर कुलपति की अध्यक्षता हुई बैठक

अयोध्या(आरएनएस)। डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय की स्वर्ण जयंती को लेकर कुलपति प्रो0 प्रतिभा गोयल की अध्यक्षता में शनिवार को सायं चार बजे कॉफी टेबल मुद्रण समिति के संयोजक एवं सदस्यों के साथ बैठक हुई जिसमें विश्वविद्यालय के 50 वर्षो की शैक्षणिक यात्रा को कॉफी टेबल बुक में शामिल किए जाने की चर्चा की गई। कुलपति ने बताया कि 04 मार्च, 1975 को विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी। इसके 50 वर्ष अगले माह पूरे होने जा रहे है। पूरा विश्वविद्यालय परिवार भव्यता के साथ स्वर्ण जयंती मनायेगा, जो वर्ष भर चलेगा। इस उत्सव को लेकर विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर कई प्रतियोगिताएं आयोजित होगी। बैठक में कुलपति प्रो0 गोयल ने बताया कि विश्वविद्यालय की स्वर्ण जंयती को भव्यता प्रदान करने के लिए समितियां बना दी गई। जिसमें समन्वय समिति में कुलपति पदेन अध्यक्ष, एवं समस्त विभागाध्यक्ष, संकायाध्यक्ष, वित्त अधिकारी पूर्णेन्दु शुक्ल, कुलसचिव उमानाथ, व समस्त उपकुसचिव, सहायक कुलसचिव अन्य सदस्य शामिल है। इसके अतिरिक्त काफी टेबल मुद्रण समिति, मीडिया समिति, वित्त समिति, सांस्कृतिक एवं पाठ्यक्रमेतर समिति, स्पोट्स एवं योगा समिति, साहित्य गतिविधि समिति, उद्योग अकादमिक सहयोग समिति और एल्युमिनाई मीट समिति बनाई गई है। सभी समिति संयोजकों दिशा–निर्देशन में तैयारियों को अंतिम रूप देंगे। बैठक में कुलपति ने सभी से योजनाबद्ध कार्य करने का निर्देश दिया। इस अवसर पर कुलसचिव उमानाथ, मुख्य नियंता प्रो0 एसएस मिश्र, प्रो0 गंगा राम मिश्र, डॉ0 संदीप गुप्ता, डॉ0 आशीष पाण्डेय, डॉ0 अंकित मिश्रा, सुरेन्द्र प्रसाद मौजूद रहे।

गंगा साइक्लोथोन टीम का स्वागत

कानपुर । भारतीय सेना की 137 सीईटीएफ बटालियन टीए 39 गोरखा राइफल गंगा टास्क फोर्स ने सेठ मोतीलाल खेड़िया इंटर कॉलेज, कानपुर नगर मे गंगा टास्क फोर्स के कंपनी कमांडर लेफ्टिनेंट कर्नल अनूप कुमार ओझा ने कॉलेज प्रधानाध्यापक और छात्र–छात्राओं के साथ मिलकर अतुल गंगा साइक्लोथोन टीम का भव्य स्वागत किया इस अवसर पर मुख्य अतिथि कर्नल हेम लोहिमी संस्थापक सदस्य अतुल्य गंगा, गोपाल शर्मा संस्थापक सदस्य अतुल्य गंगा और कालेश्वर मिश्रा ग्रीन इंडिया संस्थापक सदस्य उपस्थित रहे गंगा टास्क फोर्स के कानपुर स्थित कंपनी कमांडर लेफ्टिनेंट कर्नल अनूप कुमार ओझा ने कॉलेज परिसर मे उपस्थित छात्र छात्रों को संबोधित करते हुए बताया कि अतुल्य गंगा की यह टीम महाकुंभ के इस शुभ अवसर पर 20 जनवरी से 31 जनवरी 2025 के बीच महाकुंभ गंगा साइक्लोथॉन आयोजन किया है जिसमें अतुल्य गंगा साइक्लोथॉन टीम गंगोत्री से हरिद्वार होते हुए साइकिल चलाकर आज हमारे बीच कानपुर पहुंची।

प्रत्याशी के लिए कांग्रेसियों ने किया जनसम्पर्क

अयोध्या(आरएनएस)। कांग्रेस पार्टी ने गठबंधन प्रत्याशी अजीत प्रसाद के समर्थन हेतु प्रचार प्रसार तेज कर दिया है। वरिष्ठ नेता पूर्व जिला अध्यक्ष राजेंद्र प्रताप सिंह जिला अध्यक्ष अशोक सिंह विधानसभा क्षेत्र मिल्कीपुर के चमनगंज कुचेरा इनायत नगर कुमारगंज तथा तहसील पहुंचकर अधिवक्ताओं से मिलकर गठबंधन के प्रत्याशी अजीत प्रसाद को भारी बहुमत से विजय बनाने की अपील की। इस अवसर पर कुमारगंज में चौपाल को संबोधित करते हुए पूर्व जिला अध्यक्ष राजेंद्र प्रताप सिंह ने कहा सांसद अवधेश प्रसाद जो पूर्व में 9 बार विधायक रह चुके हैं 9 बार विधायक होना यह जताता है कि अवधेश प्रताप अपने काम अपने व्यवहार विकास और रोजगार के बल पर विधायक बने अयोध्या की जनता ने उन्हें लोकसभा लायक समझा लोकसभा में भारी बहुमत से विजयी बनाकर पहुंचाया। उन्होंने कहा जात धर्म के नारे में गुमराह ना होकर विकास और रोजगार के नाम पर अजीत प्रसाद को भारी बहुमत से विजय दिलाए पूर्व जिला अध्यक्ष अशोक सिंह ने कहा भारतीय जनता पार्टी जो शासन सत्ता के बल पर मिल्कीपुर चुनाव जीतना चाहती है उसे गठबंधन के कार्यकर्ता सफल नहीं होने देंगे और अजीत प्रसाद को भारी बहुमत से विजयी बनाएंगे इस अवसर पर पूर्व विधायक माधव प्रसाद युवक कांग्रेस के जिला अध्यक्ष रामेंद्र त्रिपाठी पूर्ण पीसीसी सदस्य अशोक कनौजिया युवा कांग्रेस के महासचिव आशीष दुबे उमानाथ शुक्ला संकटा पांडे मिल्कीपुर अधिवक्ता संघ के उपाध्यक्ष विश्वनाथ मिश्र प्रशांत शुक्ला पूर्व प्रदेश सचिव कर्म राज यादव अम्बरीष कौशल बबलू मिश्रा भगवान बहादुर शुक्ला आदि थे।

मोदी सरकार की दूरदर्शिता और विकासशील भारत के संकल्प का सशक्त ब्लूप्रिंट है आम बजट : विनोद सोनकर

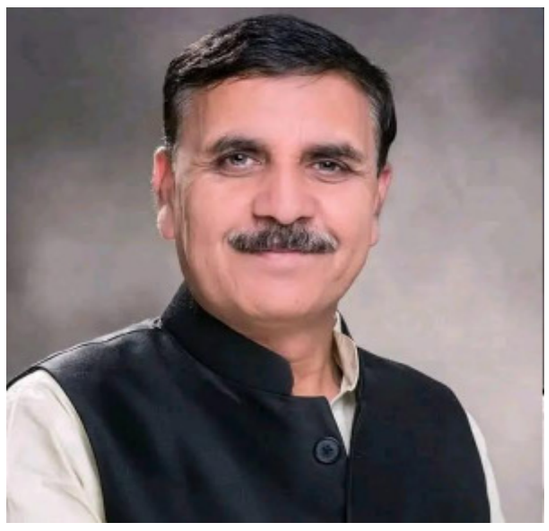

कौशांबी। भारतीय जनता पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय मंत्री व पूर्व सांसद कौशांबी विनोद सोनकर ने भारत सरकार द्वारा पेश किए गए आम बजट अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा की आज के बजट में केंद्र सरकार ने मध्यम वर्ग को आर्थिक संबल प्रदान करते हुए उनके सपनों को साकार करने की एक नई दिशा दी है। आयकर में राहत सहित, यह बजट मोदी सरकार की दूरदर्शिता और विकासशील भारत के संकल्प का सशक्त ब्लूप्रिंट है। किसान, गरीब, मध्यम वर्ग, महिलाओं और बच्चों की शिक्षा, पोषण व स्वास्थ्य से लेकर स्टार्टअप, नवाचार और निवेश तककृहर क्षेत्र को समाहित करता यह बजट 'आत्मनिर्भर भारत' के लक्ष्य की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है। इस सर्वसमावेशी और प्रगतिशील बजट के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण बधाई की पात्र हैं

निस्वार्थ भाव से का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत कर रहा भारत सेवाश्रम

महाकुम्भ नगर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ महाकुम्भ नगर के सेक्टर 5 स्थित भारत सेवाश्रम के शिविर गए। जहां उन्होंने सेवाश्रम के साधु संतों से मुलाकात की। साधु संतों ने महाकुम्भ में उनके द्वारा किए जा रहे सामुदायिक और सेवा के कार्यों की जानकारी भी सीएम से साझा की।सीएम ने कहा कि भारत सेवाश्रम सौ से अधिक वर्षों से निस्वार्थ भाव से समाज में सेवा का कार्य कर रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि उनके गुरु स्वामी अवैद्यनाथ और भारत सेवाश्रम के संत स्वामी असीमानंद जी ने साथ साथ समाज सेवा का लंबा समय बिताया था। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महाकुम्भ में सनातन को आगे ले जाने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील विभिन्न सम्प्रदायों के साधु संतों के साथ सामुदायिक और गरीबों की सेवा में लगे ध्ार्मिक और आध्यात्मिक संगठनों से भी मुलाकात की। आयोजन की अगुवाई कर रहे भारत सेवाश्रम के स्वामी आत्मजानंद का कहना है कि मुख्य मंत्री ने शिविर में भारत सेवाश्रम के संस्थापक स्वामी प्रणवानंद जी की तस्वीर पर माल्यार्पण किया और उनकी आरती भी की। इस अवसर पर सीएम ने वहां मौजूद साधु संतों से बातचीत भी। सीएम योगी के शिविर आगमन पर भारत सेवाश्रम के संतों ने महा कुम्भ में उनके धार्मिक संगठन द्वारा चलाए जा रहे सेवा कार्यों की जानकारी भी साझा की। भारत सेवाश्रम के महा कुम्भ प्रभारी स्वामी भास्करानंद ने बताया कि भारत सेवाश्रम मानव सेवा के साथ नारायण सेवा का कार्य करने वाला एक हिंदू धार्मिक और आध्यात्मिक संगठन है जो मानवीय कार्यों पर केंद्रित है। 1917 में इसकी स्थापना करने वाले पंडित संत आचार्य स्वामी प्रणवानंद महाराज ने माघ के महीने में इसी संगम के किनारे संन्यास लिया था। इसलिए इस संगम की धरती और महाकुम्भ इस आध्यात्मिक संगठन से खास संबंध ा है। स्वामी प्रणवानंद जी ने माघी पूर्णिमा के ही दिन संगठन की नींव रखी और उसका नाम रखा भारत सेवाश्रम संघ रखा गया।

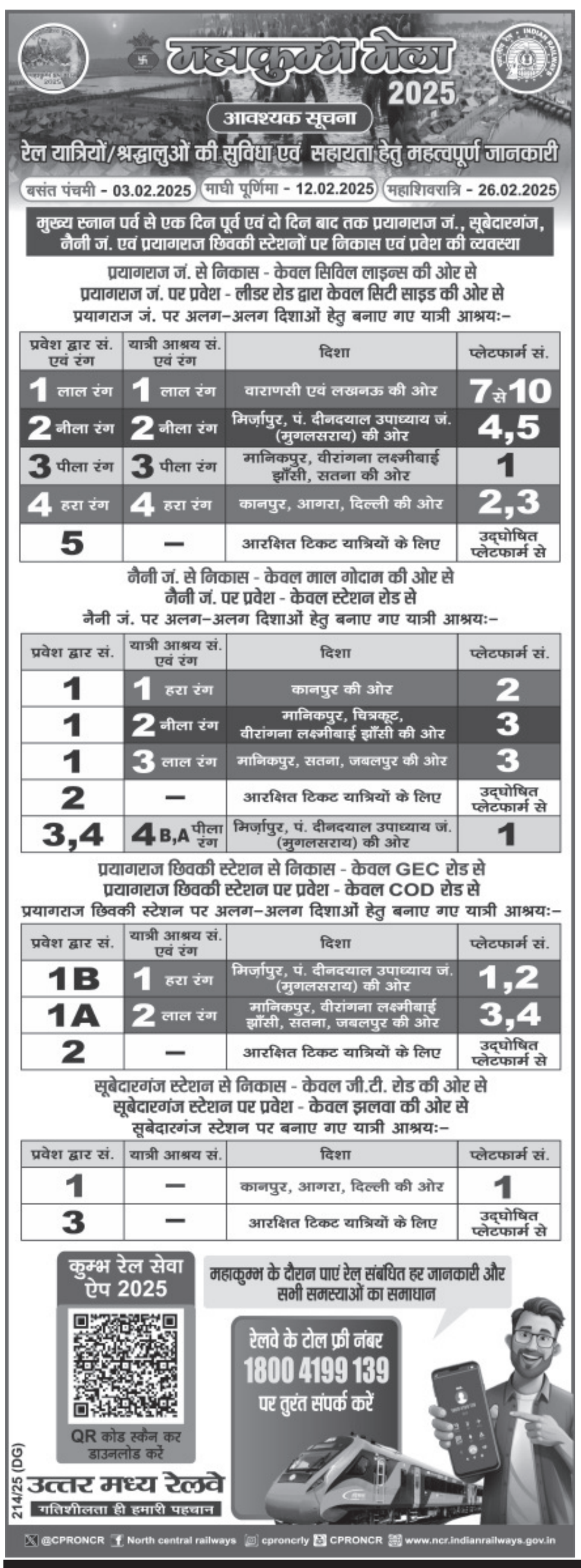

महानिदेशक सीबीसी ने महाकुंभ मेले में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

महाकुंभ नगर। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की इकाई केंद्रीय संचार ब्यूरो (सीबीसी) के महानिदेशक योगेश कुमार बावेजा ने शनिवार को प्रयागराज महाकुंभ मेले में श्जनभागीदारी से जन कल्याण' और भारत सरकार के विगत 10 वर्षों में उपलब्धियों, कार्यक्रमों, नीतियों एवं योजनाओं पर लगायी गयी डिजिटल प्रदर्शनी का अवलोकन किया। उनके साथ सीबीसी के अपर महानिदेशक अजय अग्रवाल भी उपस्थित रहे। आकर्षक एवं सूचनाप्रद डिजिटल प्रदर्शनी को देखकर महानिदेशक बावेजा ने कहा कि इस प्रदर्शनी में भारत सरकार की योजनाओं और उपलब्धियों को उत्तम तरीके से प्रदर्शित किया गया है। एनामार्फिक वाल, एलईडी टीवी स्क्रीन वाल, होलोग्राफिक सिलेंडर जैसी नई तकनीक से विकसित इस मल्टीमीडिया प्रदर्शनी से आम लोगों को विभिन्न योजनाओं के बारे में बेहतर जानकारी मिल रही है। महानिदेशक ने कहा कि सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की इस प्रदर्शनी में केंद्र सरकार के जनकल्याणकारी योजनाओं एवं नीतियों को प्रदर्शित किया जा रहा है। इसका उद्देश्य लोगों को केंद्र सरकार के जनकल्याणकारी कार्यों एवं पहलो से अवगत कराना है। जिससे वह इन नीतियों, कार्यक्रमों एवं योजनाओं का लाभ ले सके। भ्रमण के दौरान महानिदेशक ने सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की ओर से महाकुंभ में किए जा रहे कार्यों का जायजा लिया तथा सीबीसी और पीआईबी के अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। इस दौरान उन्होंने सीबीसी और पीआईबी के अधिकारियों को कार्य में समन्वयन स्थापित करने तथा प्रचार-प्रसार से जुड़े कार्यों के कुशल प्रबंधन के लिए आवश्यक निर्देश भी दिए। प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा लगाई गई। यह डिजिटल प्रदर्शनी जो 13 जनवरी से 26 फरवरी के बीच श्रद्धालुओं और आगंतुकों को भारत सरकार की प्रमुख योजनाओं, नीतियों और राष्ट्रीय एकता के प्रयासों की जानकारी देने के लिए एक अनूठा माध्यम बनी हुई है। यह प्रदर्शनी श्एकता ही समाज का बल हैश की थीम पर आधारित है, जिसमें श्एक राष्ट्र, एक करश, श्एक देश, एक पावर ग्रिडश, श्एक देश, एक राशन कार्डश जैसी पहलों के जरिये देश को जोड़ने के सरकार के प्रयासों को दर्शाया गया है। इसके साथ ही, जनभागीदारी से जनकल्याण की भावना को साकार करते हुए उद्यमिता, स्वरोजगार और आर्थिक सशक्तिकरण से जुड़ी योजनाओं को विशेष रूप से प्रस्तुत किया गया है। एलईडी स्क्रीन, डिजिटल डिस्प्ले और दृश्य-श्रव्य माध्यमों से यह प्रदर्शनी न केवल आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण का संदेश दे रही है, बल्कि आधुनिक तकनीक से जन-जन को जोड़ने का माध्यम भी बन रही है। श्रद्धालु यहां सरकारी योजनाओं की विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के साथ-साथ राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका के प्रति भी जागरूक हो रहे हैं। सीबीसी प्रयागराज द्वारा डी.जी. एवं ए.डी.जी. का प्रदर्शनी परिसर में स्वागत किया गया एवं प्रदर्शनी की अब तक की गतिविधियों के बारे में जानकारी प्रदान की गई।

त्रिवेणी तट पर नागा साधु बने आकर्षण का केंद्र

महाकुम्भ के अंतिम अमृत स्नान पर नागा श्रद्धालुओं को देखने उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़
ज्यादातर अखाड़ों का नेतृत्व कर रहे नागा साधुओं के अद्भुत प्रदर्शन ने हर किसी को किया मंत्रमुग्ध
सवार और पैदल चल रहे नागा साधुओं ने शस्त्रों के साथ अपनी युद्ध कला का भी किया प्रदर्शन

महाकुम्भ नगर। महाकुम्भ के अंतिम अमृत स्नान के दौरान नागा साधुओं का अद्भुत प्रदर्शन श्रद्धालुओं के लिए आकर्षण का केंद्र बना। त्रिवेणी तट पर इन साधुओं की पारम्परिक और अद्वितीय गतिविधियों ने सभी का ध्यान अपनी ओर खींचा। अमृत स्नान के लिए ज्यादातर अखाड़ों का नेतृत्व कर रहे इन नागा साधुओं का अनुशासन और उनका पारम्परिक शस्त्र कौशल देखने लायक था। कभी डमरू बजाते हुए तो कभी भाले और तलवारें लहराते हुए, इन साधुओं ने युद्ध कला का अद्भुत प्रदर्शन किया। लाठियां भांजते और अठखेलियां करते हुए ये साधु अपनी परम्परा और जोश का प्रदर्शन कर रहे थे।

अखाड़ों की शोभा यात्रा में कुछ नागा साधु घोड़ों पर सवार थे तो कुछ पैदल चलते हुए अपनी विशिष्ट वेशभूषा और आभूषणों से सजे हुए थे। जटाओं में फूल, फूलों की मालाएं और त्रिशूल हवा में लहराते हुए उन्होंने महाकुम्भ की पवित्रता को और भी बढ़ा दिया। स्व-अनुशासन में रहने वाले इन साधुओं को कोई रोक नहीं सकता था, लेकिन वो अपने अखाड़ों के शीर्ष पदाधिकारियों के आदेशों का पालन करते हुए आगे बढ़े। नगाड़ों की गूंज के बीच उनके जोश ने इस अवसर को और भी खास बना दिया। त्रिशूल और डमरू के साथ उनके प्रदर्शन ने यह संदेश दिया कि महाकुम्भ केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि प्रकृति और मनुष्य के मिलन का उत्सव है।

शोभायात्रा के दौरान मीडिया ही नहीं, बल्कि आम श्रद्धालुओं के मोबाइल के कैमरे भी नागा साधुओं को कैप्चर करने के लिए हवा में लहरा रहे थे। नागा भी किसी को निराश नहीं कर रहे थे, बल्कि वो अपने हाव भाव से उन्हें आमंत्रित कर रहे थे। कुछ नागा तो आंखों में काला चश्मा लगाकर आम लोगों से इंटरैक्ट भी कर पा रहे थे। उनकी इस स्टाइल को हर कोई कैद कर लेना चाहता था। यही नहीं, नागा साधु नगाड़ों की ताल पर नृत्य करते हुए अपनी परंपराओं का जीवंत प्रदर्शन कर रहे थे। उनकी जोश और उत्साह से भरपूर गतिविधियों ने श्रद्धालुओं के बीच अपार उत्साह पैदा किया। जितने उत्साहित नागा साधु थे, उतने ही श्रद्धालु भी उनकी हर गतिविधि को देख मंत्रमुग्ध हो गए।

स्नान के दौरान भी नागा साधुओं का अंदाज निराला था। त्रिवेणी संगम में उन्होंने पूरे जोश के साथ प्रवेश किया और पवित्र जल के साथ अठखेलियां कीं। इस दौरान सभी नागा आपस में मस्ती करते नजर आए।

पुरुष नागा साधुओं के साथ ही महिला नागा सन्यासियों की भी बड़ी संख्या में मौजूदगी रही। पुरुष नागाओं की तरह ही महिला नागा सन्यासी भी उसी ढंग से तप और योग में लीन रहती हैं। फर्क सिर्फ इतना होता है कि ये बिना सिलाया गेरुआ वस्त्र धारण करती हैं। उन्हें भी परिवार से अलग होना पड़ता है। खुद के साथ परिवार के लोगों का पिंड दान करना होता है तब जाकर महिला नागा सन्यासी बन पाती हैं। जब एक बार महिला नागा सन्यासी बन जाती हैं तो उनका लक्ष्य धर्म की रक्षा, सनातन की रक्षा करना होता है। इस महाकुम्भ में हर कोई इनके बारे में जानने को उत्सुक नजर आ रहा है।

नागा साधुओं ने अपने व्यवहार और प्रदर्शन से यह संदेश दिया कि महाकुम्भ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि मनुष्य के आत्मिक और प्राकृतिक मिलन का उत्सव है। उनकी हर गतिविधि में महाकुम्भ की पवित्रता और उल्लास का अद्वितीय अनुभव झलक रहा था। महाकुम्भ का यह आयोजन नागा साधुओं की विशिष्ट गतिविधियों और उनकी परंपराओं के कारण लंबे समय तक याद रखा जाएगा।

बसंत पंचमी जागरण का दिन है: ब्रह्माकुमारी मनोरमा

महाकुम्भ नगर। मां सरस्वती को ब्रह्मा की बेटी कहा जाता है। परमात्मा ने ब्रह्मा मुख से जो गीता ज्ञान दिया है उसके आधार पर ही सतयुगी संसार की स्थापना होनी है। मां सरस्वती को ज्ञान की देवी कहा जाता है। क्योंकि उन्होंने परमात्मा के इस गीता ज्ञान को अपने में सम्पूर्ण रूप से धारण किया तथा ज्ञान की देवी बन गई। जब हमारे अंतः चक्षु अर्थात् ज्ञान के नेत्र खुल जाते हैं तब हमसे भूलकर भी भूलें नहीं होंगी। हमारी दिव्य बुद्धि जागृत हो जाती है, यही सच्चा जागरण है। उक्त बातें मेला क्षेत्र में बसंत पंचमी के अवसर पर ब्रह्मावत्सों को संबोधित करते हुए ब्रह्माकुमारीज प्रयागराज की प्रभारी मनोरमा दीदी ने कही। उन्होंने सरस्वती मां की वीणा के सात तारों का आध्यात्मिक रहस्य बताते हुए कहा कि आत्मा में सात गुण निहीत हैं। सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम, पवित्रता, ज्ञान और शक्ति आत्मा के मूल गुण हैं। जब हम इन गुणों के सागर परमात्मा से अपना सम्बन्ध जोड़ते हैं तब हम इनके स्वरूप बन जाते हैं। इस दौरान मां सरस्वती के निमित्त परमात्मा को भोग स्वीकार कराया गया व सभी को दीदी ने तिलक दिया। उल्लेखनीय है कि, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा सेक्टर 7, बजरंगदास मार्ग पर स्वर्णिम भारत ज्ञान कुम्भ मेले का आयोजन किया गया है। मेले का अवलोकन करने प्रतिदिन हजारों की संख्या में श्रद्धालुजन पहुंच रहे। विदेशी यात्री भी रूचि के साथ प्रदर्शनी का अवलोकन कर रहे हैं। इस अवसर पर मनोरमा दीदी ने बताया कि स्वर्णिम भारत के निर्माण में 'आध्यात्मिकता का योगदान' विषय पर 5 फरवरी दोपहर 3 बजे, स्वर्णिम भारत ज्ञान कुम्भ के प्रांगण में संत सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें संत-महात्माओं एवं प्रबुद्धजनों के विचार सुनने को मिलेंगे।

जप, तप, साधना की पुण्य भूमि पर हो रहा विविध साधनाओं का संगम

महाकुम्भ नगर। महाकुम्भ त्याग और तपस्या के साथ विभिन्न साधनाओं के संकल्प का भी पर्व है। प्रयागराज महाकुम्भ साधनाओं के विविध संकल्पों का साक्षी बन रहा है। ऐसी ही एक साधना है पंच धूनी तपस्या जिसे अग्नि स्नान की साधना भी कहा जाता है। जिसकी शुरुआत बसंत पंचमी के अमृत स्नान पर्व से हो गई। कुम्भ क्षेत्र जप, तप और साधना का क्षेत्र है। जिसके हर कोने में कोई न कोई साधक अपनी साधना में रत नजर आएगा। महाकुम्भ के तपस्वी नगर में बसंत पंचमी से एक खास तरह की साधना का आरम्भ हुआ है, जिसे लेकर श्रद्धालुओं में खासा कौतूहल है।

सम्पादक
सिद्धनाथ द्विवेदी
प्रबन्धक निदेशक
दीपक जयसवाल
सम्पादकीय कार्यालय
11ई/2, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, इलाहाबाद
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पीआरबी एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के आधीन होगा।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक सिद्धनाथ द्विवेदी द्वारा काम्पीटेंट बिजनेस सर्विसेज विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित एवं 399 कृष्णानगर कीडगंज से प्रकाशित।
सम्पादक-सिद्धनाथ द्विवेदी, आरएनआई नं. UPHIN/2007/22706 रजि.नं. AD-32/2008-09 ईमेलः amritkt.alld@gmail.com फोन नं. : 9453273951, 8799627062